COAI-flier-final-2-Hindi:Layout 1 12/26/2014 2:25 PM Page 1

जी हां डॉक्टर भी करते हैं सेलफोन का इस्तेमाल

डॉक्टर और विशेषज्ञ इस बारे में क्या कहते हैं

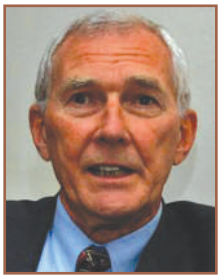

प्रोफेसर माइकेल रेपाचोली, विश्व स्वास्थ्य संगठन

चेयरमैन एमीरेटस, इंटरनेशनल कमीशन ऑन नॉन–आयोनाइजिंग रेडिएशन (आ. ईसीएनआईआरपी) और एक्स–ईएमपी प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर,
विश्व स्वास्थ्य संगठन

''डब्ल्यूएचओ की फैक्टशीट के मुताबिक मोबाइल फोन से कैंसर नहीं होता। इलेक्ट्रोमैगनेटिक रेडिएशन और कैंसर के बीच संबंध स्थापित करने के लिए हुए कई अध्ययनों से पता नहीं चल पाया कि मोबाइल रेडिएशन से कैंसर होता है।''

कृपया यह लिंक देखें : *COAI -- Expert Speak -- Mike Repacholi; https://www.youtube.com/watch?v=YGbibsFL1dA*

डॉ. राकेश जलाली

प्रोफेसर, रेडिएशन ओंकोलॉजी एवं संयोजक, न्यूरो ओंकोलॉजी ग्रुप,
टाटा मेमोरियल सेंटर, मुंबई

''मोबाइल फोन टेक्नोलॉजी में उपयोग होने वाला आरएफ तरंग संभवतः इलेक्ट्रोमैगनेटिक स्पेक्ट्रम में सबसे निचली शिरा पर होता है और डीएनए को क्षतिग्रस्त नहीं करता है।''

कृपया यह लिंक देखें : *COAI - Expert - Speak - Rakesh Jalali https://www.youtube.com/watch?v=6QoX4Fz1Agk*

प्रोफेसर वसंत नटराजन
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बेंगलुरू

''सेलफोन के फोटोन में चाहे कितनी भी शक्ति हो, लेकिन वह उतनी नहीं होती कि आपके डीएनए में बदलाव कर सके। सूर्य से धरती पर प्रति वर्ग मीटर 1000 वाट का शक्ति घनत्व पहुंचता है, जबकि एक सेलफोन टावर के नीचे यह उसका 10,000वां हिस्सा करीब 0.1 वाट प्रति वर्ग मीटर होता है।''

डॉ. भाविन जनखड़िया

रेडियालॉजिस्ट एवं अध्यक्ष, इंडियन रेडियोलॉजी एंड इमेजिंग एसोसिएशन

''हम 115 वर्ष से अधिक समय से एक्स रे रेडिएशन का उपयोग कर रहे हैं और अब तक हम कैंसर तथा रेडिएशन का कोई खास संबंध स्थापित नहीं कर पाए हैं। और मोबाइल टावर रेडिएशन ऐसा रेडिएशन होता है, जिससे मानव को कोई खतरा नहीं पहुंचता है।''

कृपया यह लिंक देखें : *COAI -- Expert Speak -- Bhavin Jhankaria https://www.youtube.com/watch?v=o-Cy-pFtgAU*

डॉ. राजेश दीक्षित

एपीडेमियोलॉजी, यूरोलॉजी विभाग (डीएमजी),
टाटा मेमोरियल सेंटर मुंबई

''मोबाइल फोन से निकलने वाले आरएफ उत्सर्जन और कैंसर के बीच संबंध का पता लगाने के लिए दुनिया भर में अनेक शोध किए गए हैं। लेकिन अब तक इस बात का समुचित प्रमाण नहीं मिला है कि मोबाइल फोन से आदमी को कैंसर होता है।''

कृपया यह लिंक देखें : *http://www.coai.com/Indian-Telecom-Infocentre/Mobility-and-Health*

डॉ. विजयालक्ष्मी

डिपार्टमेंट ऑफ रेडिएशन ओंकोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास हेल्थ साइंस सेंटर एवं सदस्य, आईएआरसी,
विश्व स्वास्थ्य संगठन

''गंभीर और पुराने एक्सपोजर के मेरे कई अध्ययनों से पता चलता है कि मोबाइल फोन से निकलने वाले आरएफ रेडिएशन में उतनी ऊर्जा नहीं होती कि वह मानव या पशुओं की कोशिकाओं के जेनेटिक पदार्थ में कोई बदलाव कर सके। दुनिया के दूसरे हिस्से के शोधार्थियों ने भी अपने अध्ययनों में ऐसा ही पाया है।''

क्या कहती हैं सरकारें, कोर्ट और विश्व स्वास्थ्य संगठन

''अब तक मिले प्रमाणों से बेस स्टेशन (मोबाइल टावर) से उत्पन्न होने वाले आरएफ सिग्नल से किसी प्रतिकूल असर का प्रभाव नहीं मिला है।''

– श्री रवि शंकर प्रसाद, माननीय केंद्रीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी तथा कानून व न्याय मंत्री, 7 जुलाई 2014 को लोक सभा में एक लिखित जवाब में।

''इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि मोबाइल टावर से लोगों का स्वास्थ्य प्रभावित हेता है।''

– माननीय केरल उच्च न्यायालय, 9 जुलाई 2013 को 2012 केडब्ल्यू.पी. (सी) संख्या 24569 में।

''सेलफोन से निकलने वाले इलेक्ट्रोमैगनेटिक फील्ड के मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले कुप्रभावों को लेकर चिंता करने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि भारत में अपनाई गई सुरक्षा सीमा में रेडियेशन के सभी जैविक प्रभाव को ध्यान में रखा गया है।''

– एक शीर्ष समिति, माननीय इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ के जनवरी 2014 के आदेश के तहत गठित।

''हम यह बताना जरूरी समझते हैं कि सभी संबंधित विभागों को टीवी, रेडियो, आदि के जरिए आम लोगों को यह जानकारी देनी चाहिए कि उन्हें बेस ट्रांसीवर्स, जिसे वाईफाई मोबाइल टावर कहते हैं, लगाए जाने से डरने की कोई जरूरत नहीं है।''

– माननीय गुजरात उच्च न्यायालय, 9 सितंबर 2014 को 2014 के एससीए संख्या 5548 में।

''पिछले दो दशकों में यह जानने के लिए बड़ी संख्या में अध्ययन किए गए हैं कि क्या मोबाइल फोन का स्वास्थ्य पर कोई बुरा असर पड़ता है। अभी तक मोबाइल फोन के उपयोग से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले किसी बुरे असर की पुष्टि नहीं हुई है।''

– विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) फैक्टशीट एन 193
http://www.who.int/mediacentre/factsheets/fs193/en/Reviewed
October 2014

World Health Organization

अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की राय

अमेरिका के नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के मुताबिक
(http://www.cancer.gov/cancertopics/factsheet/Risk/cellphones):

अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एनवॉरमेंटल हेल्थ साइंसेज (एनआईईएचएस) का कहना है कि ''मौजूदा वैज्ञानिक प्रमाणों से सेल फोन उपयोग का स्वास्थ्य समस्याओं से संबंध स्थापित नहीं हुआ है, लेकिन अभी और शोध की जरूरत है।'' – जून 2014
http://www.niehs.nih.gov/health/topics/agents/cellphones/index.cfm

अमेरिकी खाद्य और औषधि प्रशासन (एफडीए), जो रेडिएशन उत्सर्जन करने वाले उपकरणों (सेलफोन सहित) और मशीनों की सुरक्षा को विनियमित करने के लिए जिम्मेदार है, का कहना है ''अनेक प्रकाशित अध्ययन सेल फोन से निकलने वाले रेडियोफ्रिक्वेंसी और स्वास्थ्य समस्या के बीच संबंध दिखाने में असफल रहे हैं।'' अप्रैल 2014
http://www.fda.gov/Radiation-EmittingProducts/RadiationEmittingProductsand-Procedures/HomeBusinessandEntertainment/CellPhones/default.htm

अमेरिका के सेंटर फॉर डिज़ीज कंट्रोल एंड प्रीवेंशन (सीडीसी) का कहना है कि कुछ अध्ययनों में हालांकि सेल फोन उपयोग के संभावित जोखिमों की बात उठाई गई है, वैज्ञानिक शोध साधारण तौर पर सेल फोन उपयोग और स्वास्थ्य प्रभाव के बीच किसी खास संबंध को मान्यता नहीं देता है।
http://www.cdc.gov/nceh/radiation/cell_phones._FAQ.html

उपर्युक्त उद्धरण इस लिंक से लिए गए हैं :
http://www.cancer.gov/cancertopics/factsheet/Risk/cellphones

यूरोपीय आयोग की साइंटिफिक कमिटी ऑन इमर्जिंग एंड न्यूली आईडेंटिफाइड हेल्थ रिस्क्स (एससीईएनआइर्एचआर)–दिसंबर 2013 के मुताबिक

आरएफ ईएमएफ एक्सपोजर पर एपीडेमियोलॉजिकल अध्ययन स्पष्ट रूप से ब्रेन ट्यूमर के जोखिम का संकेत नहीं देते और न ही सिर और गर्दन के अन्य कैंसर या बाल्यावस्था में होने वाले कैंसर सहित अन्य मैलिगनेंट रोग का जोखिम बढ़ने का संकेत देते हैं।

समग्र तौर पर इस बात के प्रमाण हैं कि आरएफ फील्ड के प्रभाव क्षेत्र में आने से मानव की सोचने की क्षमता प्रभावित नहीं होती और न ही उसके लक्षण पैदा होते हैं।

तीन अलग–अलग क्षेत्रों (एपीडेमियोलॉजिकल, एनीमल और विट्रो अध्ययन) के प्रमाणों से स्पष्ट है कि आरएफ फील्ड के दायरे में आने से मानव में कैंसर नहीं होता है।
http://ec.europa.eu/health/scientific_committees/emerging/docs/scenihr_o_041.pdf

उत्सर्जन के दिशानिर्देश

- भारत में पालन किए जा रहे उत्सर्जन दिशानिर्देशों का डब्ल्यूएचओ से मान्यता मिली हुई है और इंटरनेशनल कमीशन ऑन नॉन–आयोनाइजिंग रेडिएशन प्रोटक्शन (आईसीएनआईआरपी) ने इसकी सिफारिश की है। दुनिया भर में 90 फीसदी देश इसका पालन करते हैं।
- मोबाइल टावरों के उत्सर्जन के लिए भारतीय नियमन दुनिया में सबसे सख्त उत्सर्जन मानक हैं जो *ICNIRP* द्वारा तय एक्सपोजर सीमा का 10वां हिस्सा, *ICNIRP* का सुरक्षा मार्जिन 50 गुणा है, जबकि ईएमएफ के लिए भारतीय सुरक्षा मार्जिन 500 गुणा अधिक है।
- मोबाइल हैंडसेट से होने वाले उत्सर्जन के लिए भारतीय नियम आईसीएनआईआरपी द्वारा की गई सिफारिश से अधिक सख्त है। भारतीय मानक प्रति एक ग्राम टिश्यू पर 1.6 वाट/किलोग्राम, जबकि आईसीएनआईआरपी मानक प्रति 10 ग्राम टिश्यू के लिए 2.0 वाट/किलोग्राम औसत है।
- दूरसंचार विभाग का टेलीकॉम एनफोर्समेंट, रिसोर्स एंड मोनिटरिंग (टीईआरएम) प्रकोष्ठ विभिन्न राज्यों में भारत सरकार द्वारा निर्धारित ईएमएफ सीमा का पालन सुनिश्चित करता है।
- मोबाइल टावरों/हैंडसेट से निकलने वाले उत्सर्जन की चिंता करने वाले अपने राज्यों के टीईआरएम प्रकोष्ठ कार्यालयों से सहयोग और मार्गदर्शन के लिए संपर्क कर सकते हैं।

(लिंक -http://www.dot.gov.in/access-services/journey-emf)

किसी अन्य प्रश्न के लिए संपर्क करें : *emf@coai.in*
अधिक जानकारी के लिए देखें : *http://www.coai.com/Indian-Telecom-Infocentre/Mobility-and-Health*

COAI

INDIAN CELLULAR ASSOCIATION ICA

taipa
Tower and Infrastructure Providers Association